डॉ. सोनवणे राजेंद्र

जल पर आधारित मुहावरे-लोकोक्तियाँ

जल, जीवन और समाज तीनों का गहरा और घनिष्ठ संबंध है। जल पर ही जीवन और समाज का अस्तित्व टिका हुआ होता है। इसी कारण समाज में जल पूजन किया जाता है। जल, जीवन और समाज एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। शायद इसी कारण 'जल' को लेकर समाज में कई मुहावरे और कहावतें प्रचलित हैं। पानी को लेकर समाज में प्रयुक्त ये मुहावरे और लोकोक्तियाँ कब से प्रयुक्त हो रही हैं इसके बारे में निश्चित कुछ कहा नहीं जा सकता। मगर इतना जरूर कह सकते हैं कि भाषा के अस्तित्व के साथ ही जल को लेकर मुहावरे और लोकोक्तियाँ प्रचलित हुयी होंगी। यहाँ हम पानी पर आधारित मुहावरों और लोकोक्तियों पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

'मुहावरा' शब्द वैसे देखा जाए तो 'अरबी' भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है 'बातचीत करना' या 'किसी के प्रश्न का उत्तर देना'। हिन्दी में उसे 'मुहावत'[1] कहा जाता है तो उर्दू में इसे 'मुहाविरा' कहते हैं। मुहावरे की परिभाषा हम सब जानते हैं कि 'जो वाक्यांश सामान्य अर्थ का बोध न कराकर कोई विशिष्ट अर्थ का बोध कराता हो उसे मुहावरा कहा जाता है।'

वैसे देखा जाए तो मुहावरे स्वयं बनते हैं। मगर कभी-कभी उसे तोड़-मरोड़कर बनाया भी जाता है। हमेशा बोलते समय हमारे दिमाग से यह निकलते हैं और फिर समाज में प्रचलित होते हैं।

'जल' को लेकर कई ऐसे मुहावरे समाज में प्रयुक्त हैं जो आज चारों ओर संभाषणों में प्रयुक्त हो रहें हैं। जो उसके अर्थ के साथ नीचे दिए जा रहे हैं-

- **पानी को लेकर कुछ मुहावरेः-**

आसमान से गिरना, (अचानक प्रस्तुत होना) उल्टी गंगा बहना (रीति विरूद्ध कार्य करना), गागर में सागर भरना (थोड़े में बहुत करना), जल-भुनना (कुढ़ना) यहाँ 'जल' का प्रयोग जलन के लिए किया गया है। मुँह में पानी आना (ललचाना), समुद्र में अदहन देना (असम्भव कार्य करना), इन मुहावरों के अतिरिक्त दुग्ध का दुग्ध और पानी का पानी करना, पानी पानी होना आदि अनेक मुहावरे जनजीवन में पानी को लेकर प्रचलित हैं।

- **लोकोक्तियाँः**

लोगों द्वारा लोगों के लिए कही गई उक्ति यानी लोकोक्ति होती है। लोकोक्ति जनजीवन का वह अमूल्य बेशकीमती साहित्य है जो कुछ मात्रा में अलिखित तो कुछ मात्रा में लिखित होता है। इसे समाज का 'कथन' या 'कहावत' भी कहा जाता है। नितिन टण्डन के मतानुसार 'जहाँ मुहावरे अपूर्ण होते हैं, वहीं लोकोक्तियाँ अपने आप में पूर्ण होती हैं।'[2] अक्सर लोकोक्तियाँ कथा-कहानियों से जुड़ी होती हैं। उनमें एक इतिहास होता है। लोकोक्तियों के कारण बातचीत ओजस्वी और प्रभावशाली बनती है। पानी को लेकर समाज में भी कई लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं।

जैसेः-

इन बूंदो भेंट नहीं (ऐसा मौका फिर न मिलेगा), उलटी गंगा बहाना (नीति के विरूद्ध चलना), एक-एक बूँद से सागर भरना (थोड़े-थोड़े से ही विशाल संग्रह करना), गंगा नहा लिए (सभी कार्य निपटाना), गरजने वाले बरसते नहीं (डींगे मारने वाला व्यक्ति कुछ नहीं करता), गरजे सो बरसे नहीं (डींग मारते रह जाना), घर बैठे गंगा आयी (बिना प्रयत्न लक्ष्मी जी को पाना), घाट-घाट का पानी पिए है (जगह-जगह की खाक छान चुकना), चुल्लू भर पानी में डूब मरो (अत्यन्त हीन आचरण करने वाले व्यक्ति को लज्जित

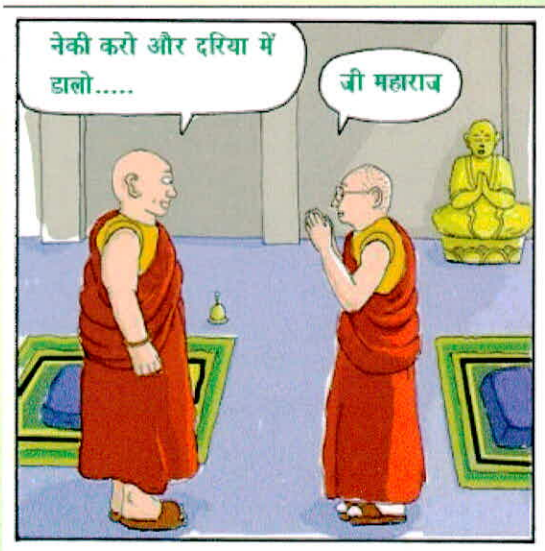

करना), जल में रहकर मगरमच्छ से बैर (जहाँ रहना वहाँ के राजा से बैर न लेना), डूबते को तिनके का सहारा (मुसीबत के समय थोड़ी सी सहायता पर्याप्त है), थोड़े से प्यास नहीं बुझती (बड़े कार्य करने के लिए साधारण उपाय काफी नहीं है), नंगा नहाएगा

क्या, निचोड़ेगा क्या (अत्यंत निर्धन व्यक्ति), नदी नाव संयोग (संयोग से होनी वाली मुलाकातें), नेकी कर दरिया में डाल (किसी पर किया गया उपकार का उल्लेख नहीं करना चाहिए), पानी में आग नहीं लगती (असंभव कार्य करना), पानी पीकर जात पूछना (कार्यकर परिचय जानना), प्यासा कुँए के पास जाता है (जरूरतमंद दूसरों के पास जाता है), फिसल गए तो हरहर गंगे (विफल होने पर आदर्श की बातें करना), बहती गंगा में हाथ धोना (सभी के साथ, हाथ साफ करना), मन चंगा तो कठौती में गंगा (मन साफ हो तो गंगा भी उसकी कठौती में होती है), उलटी गंगा बहती है (रीति-रिवाज उलट जाना), वह पानी मुलतान गया (वक्त बदल गया), सावन हरे न भादों सूखे (हर अवस्था में एक रहना), सिर मुँडाते ही ओले पड़े (किसी कार्य के आरंभ में ही विघ्न पड़ जाना), सूखे धानो पानी पड़ा (बिगड़ता काम बन गया), हौज भरें तो फब्वारे छूटें (आमदनी हो तो, खर्च किया) इन प्रसिद्ध पानी पर आधारित लोकोक्तियों के अतिरिक्त पानी में आग नहीं लगती, पानी रे पानी तेरा रंग कैसा जिसमें मिलाओ लगे उसके जैसा, खाना तो नहीं पानी तो पूछो, आदि कई लोकोक्तियाँ जन जीवन में भाषा की शोभा बड़ा रहे हैं। जिस तरह जल को छोड़कर प्राणी मात्र की कल्पना नहीं की जा सकती ठीक उसी तरह मुहावरे और कहावतों को छोड़कर भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती। पानी को लेकर या पानी पर आधारित ये मुहावरे कहावतें बोधप्रद तो हैं ही साथ ही ये हमें पानी का महत्व भी समय-समय पर बताती हैं।

1. पर्यायवाची मुहावरे एवं लोकोक्ति कोश-संपादक-नितिन टण्डन (प्र.सं. 2003)
2. पर्यायवाची मुहावरे एवं लोकोक्ति कोश-संपादक-नितिन टण्डन (प्र.सं. 2003)

संपर्क करें:
डॉ. सोनवणे राजेंद्र
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
स्वा.सावरकर महाविद्यालय,
बीड, जिला-बीड-431122 (महाराष्ट्र)
मो.न.: 09420798075